रेलगाड़ी

हरीन्द्रनाथ चट्टोपाध्याय

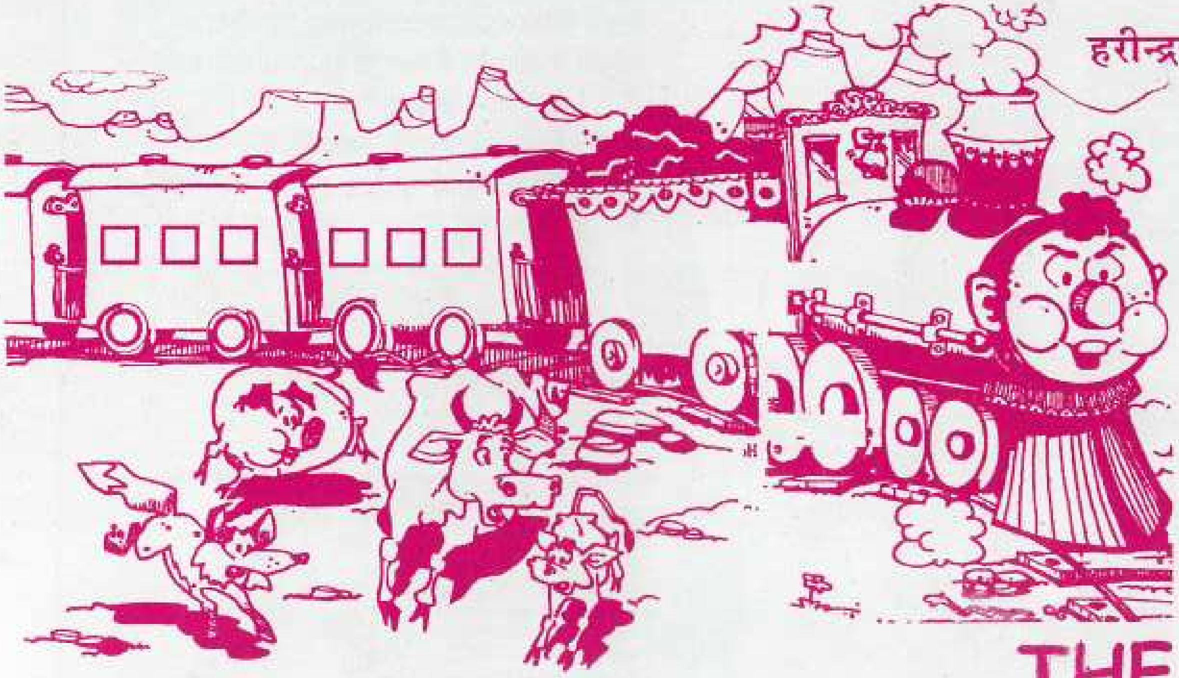

THE TRAIN

HARINDRANATH CHATTOPADHYAYA

रेलगाड़ी और नाव चली : हरीन्द्रनाथ चटोपध्याय

Railgadi & Nao Chali : Harindranath Chattopadhyaya

© सर्वाधिकार सुरक्षित,
भारत ज्ञान विज्ञान समिति

रेखांकन : अविनाश देशपांडे, इंदु, जेफ़ फाउलर
लेजर ग्राफिक्स: अभय कुमार झा

सातवां संस्करण : वर्ष 2007

मूल्य: 10 रुपए
Price : 10 Rupees

इस किताब का प्रकाशन भारत ज्ञान विज्ञान समिति ने देश भर में चल रहे साक्षरता अभियानों में उपयोग के लिए किया गया है। जनवाचन आंदोलन के तहत प्रकाशित इन किताबों का उद्देश्य गाँव के लोगों और बच्चों में पढ़ने-लिखने की रुचि पैदा करना है।

जनवाचन बाल पुस्तकमाला के तहत भारत ज्ञान विज्ञान समिति द्वारा प्रकाशित

Bharat Gyan Vigyan Samithi
Basement of Y.W.A. Hostel No. II, G-Block
Saket , New Delhi - 110017
Phone : 011 - 26569943
Fax : 91 - 011 - 26569773
email: bgvs@vsnl.net

रेलगाड़ी

हरीन्द्रनाथ चट्टोपाध्याय

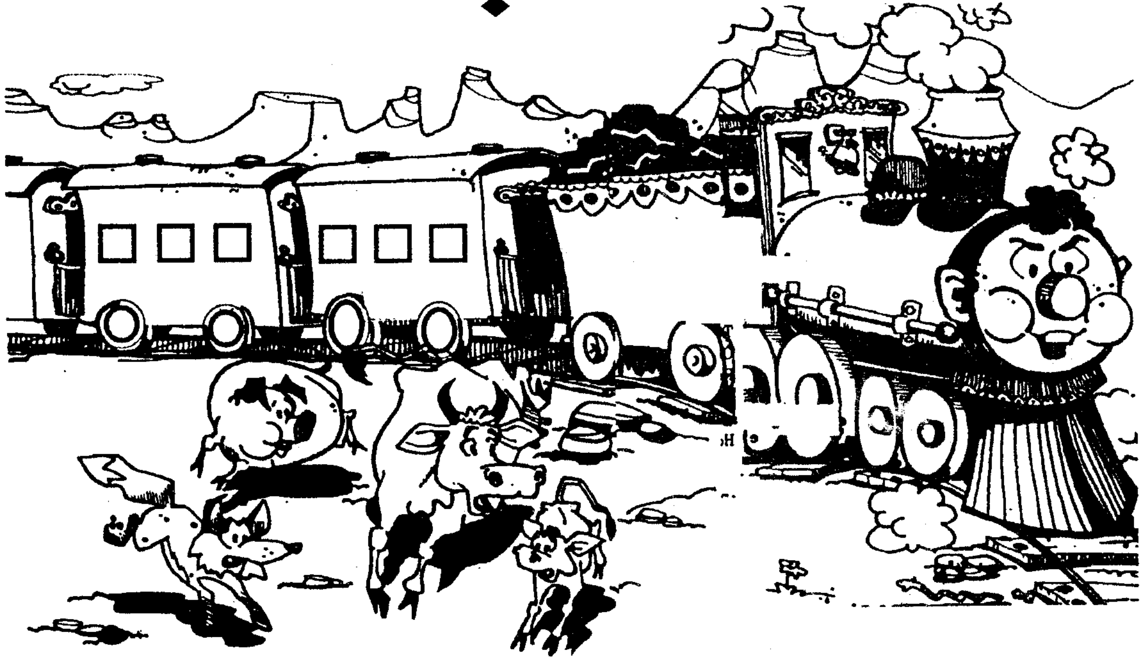

रेलगाड़ी

आओ बच्चों रेल दिखाएं
छुक-छुक करती रेल चलाएं
सीटी देकर सीट पे बैठो
एक दूजे की पीठ पे बैठो
आगे-पीछे, पीछे-आगे
लाइन से लेकिन कोई न भागे
सारे सीधी लाइन में चलना
आंखे दोनों नीची रखना
बंद आंखों से देखा जाए
आंख खुले तो कुछ न पाएं
आओ बच्चों रेल चलाएं

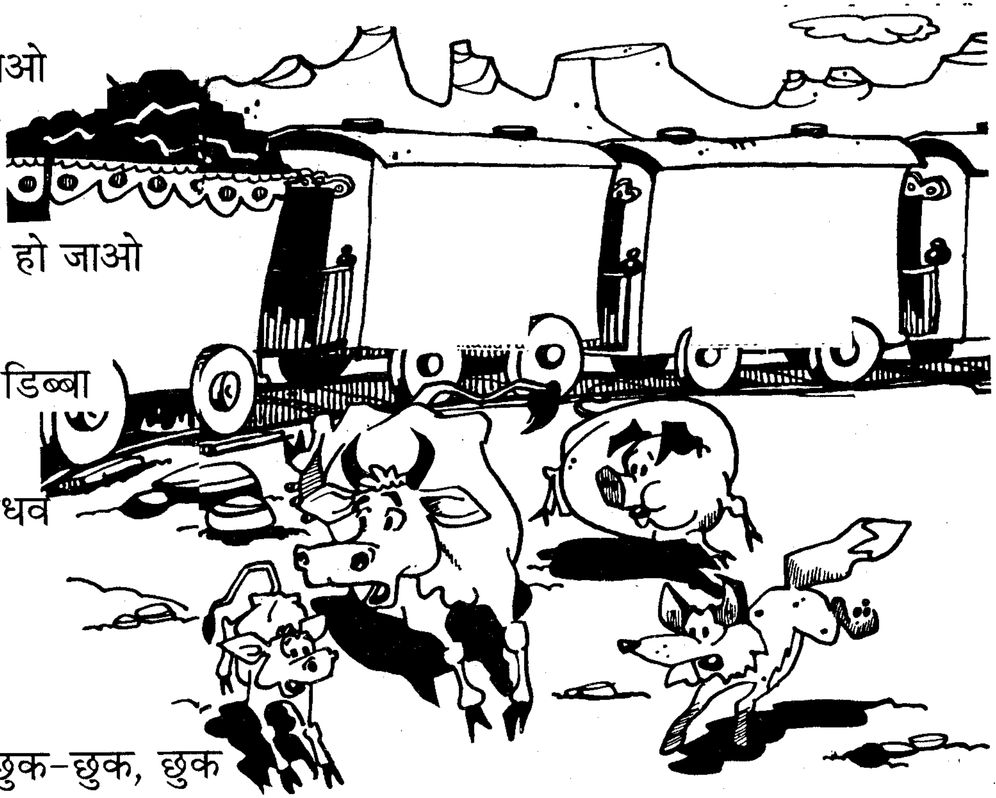

सुनो रे बच्चों, टिकट कटाओ
तुम लोग नहीं आओगे तो
रेलगाड़ी छूट जाएगी
आओ सब लाइन से खड़े हो जाओ
मुन्नी-तुम हो इंजन
ढब्बू-तुम हो कोयले का डिब्बा
चुन्नू-मुन्नू, लीला-शीला
मोहन-सोहन, जाधव-माधव
सब पैसेंजर, सब पैसेंजर

एक, दो : रेलगाड़ी, पीं:
छुक-छुक, छुक-छुक, छुक-छुक, छुक

Busy village;

बीच वाले स्टेशन बोलें
रुक-रुक, रुक-रुक, रुक-रुक, रुक-रुक
तड़क-धड़क, लोहे की सड़क
यहां से वहां, वहां से यहां
छुक-छुक, छुक-छुक, छुक-छुक, छुक
फुलाए छाती पार कर जाती
बालू रेत, आलू के खेत
बाजरा धान, बुड्ढा किसान
हरा मैदान, मंदिर मकान, चाय की दुकान
कुल्फों की डंडी, टीले पे झंडी
पानी की कुंड, पंछी का झुंड
झोपड़ी झाड़ी, खेती बाड़ी
बादल धुआं, मोठ कुंआ

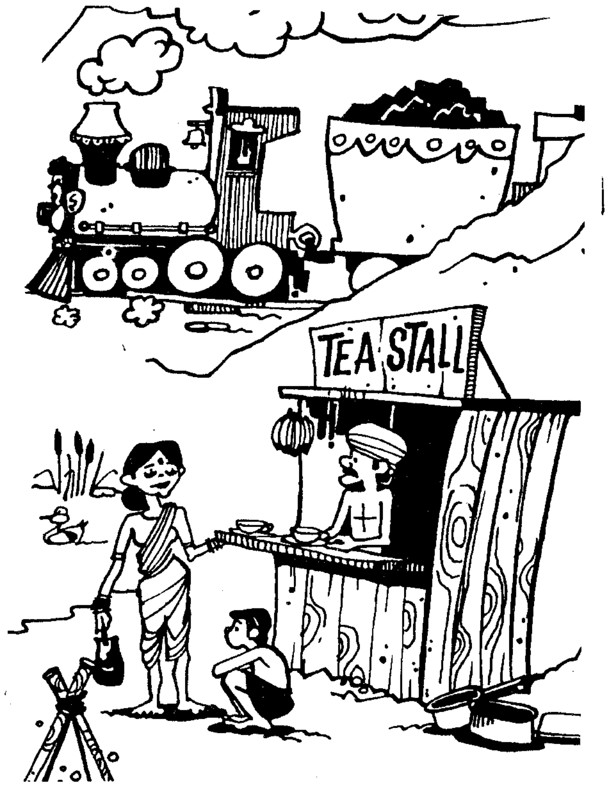

कुएं के पीछे, बाग-बगीचे
धोबी का घाट, मंगल की हाट
गांव का मेला, भीड़ झमेला
टूटी दीवार, टट्टू सवार
रेलगाड़ी, पीं.......
धरमपुर-करमपुर
करमपुर-धरमपुर
मांडवा-खंडवा
खंडवा-मांडवा
रायपुर-जयपुर
जयपुर-रायपुर
तलेगांव-मलेगांव
मलेगांव-तलेगांव

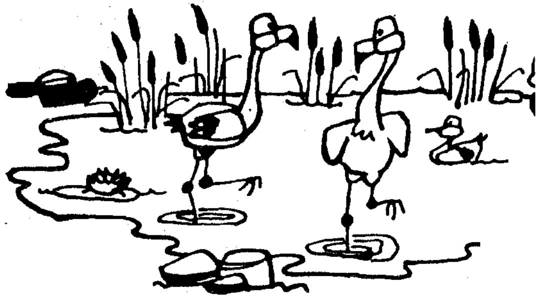

वेल्लोर–नेल्लोर
नेल्लोर–वेल्लोर
शोलापुर–कोल्हापुर
कोल्हापुर–शोलापुर
उत्कल–डिंडीगल
डिंडीगल–उत्कल
कोरेगांव–गोरेगांव
गोरेगांव–कोरेगांव
मेमदाबाद–अहमदाबाद
अहमदाबाद–मेमदाबाद
बीच वाले स्टेशन बाले
रुक–रुक, रुक–रुक, रुक–रुक, रुक

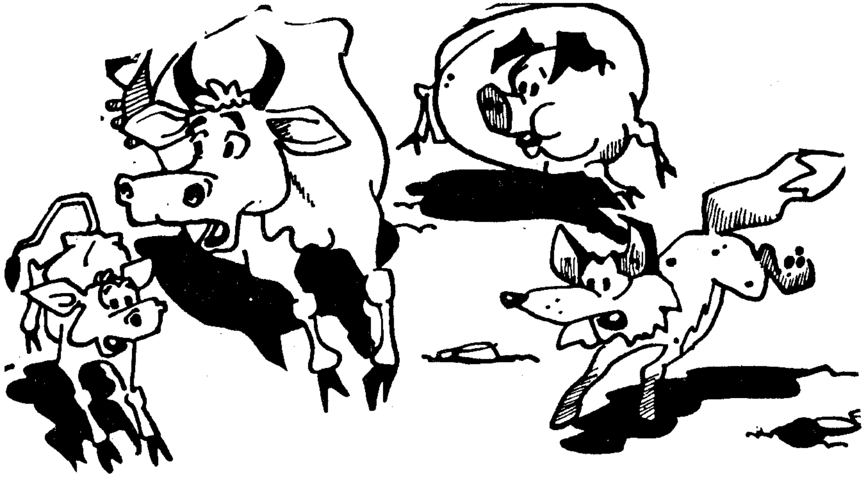

नाव चली

नाव चली
नानी की नाव चली
नीना की नानी की नाव चली
लंबे सफर पे...

सामान घर से निकाले गए
नानी के घर से निकाले गए
और नानी की नाव में डाले गए
क्या-क्या डाले गए?

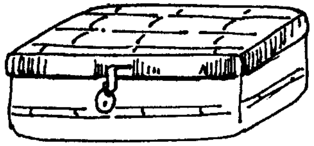
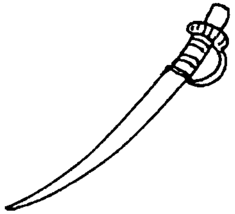
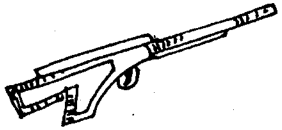
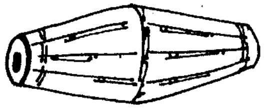
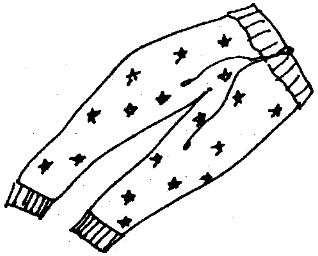

एक छड़ी, एक घड़ी
एक झाड़ू, एक लाड़ू
एक संदूक, एक बंदूक
एक सलवार, एक तलवार
एक घोड़े की जीन
एक ढोलक, एक बीन
एक घोड़े की नाल
एक धीमर का जाल
एक लहसुन, एक आलू
एक तोता, एक भालू

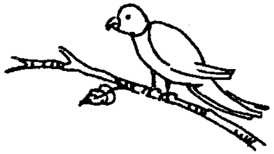

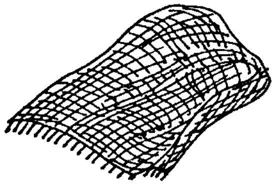

एक डोरा, एक डोरी
एक बोरा, एक बोरी
एक डंडा, एक झंडा
एक हंडा, एक अंडा
एक केला, एक आम
एक पक्का, एक कच्चा
और टोकरी में
एक बिल्ली का बच्चा

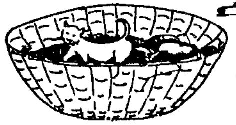

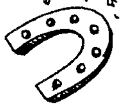

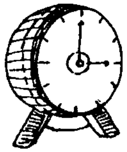

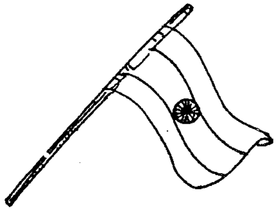

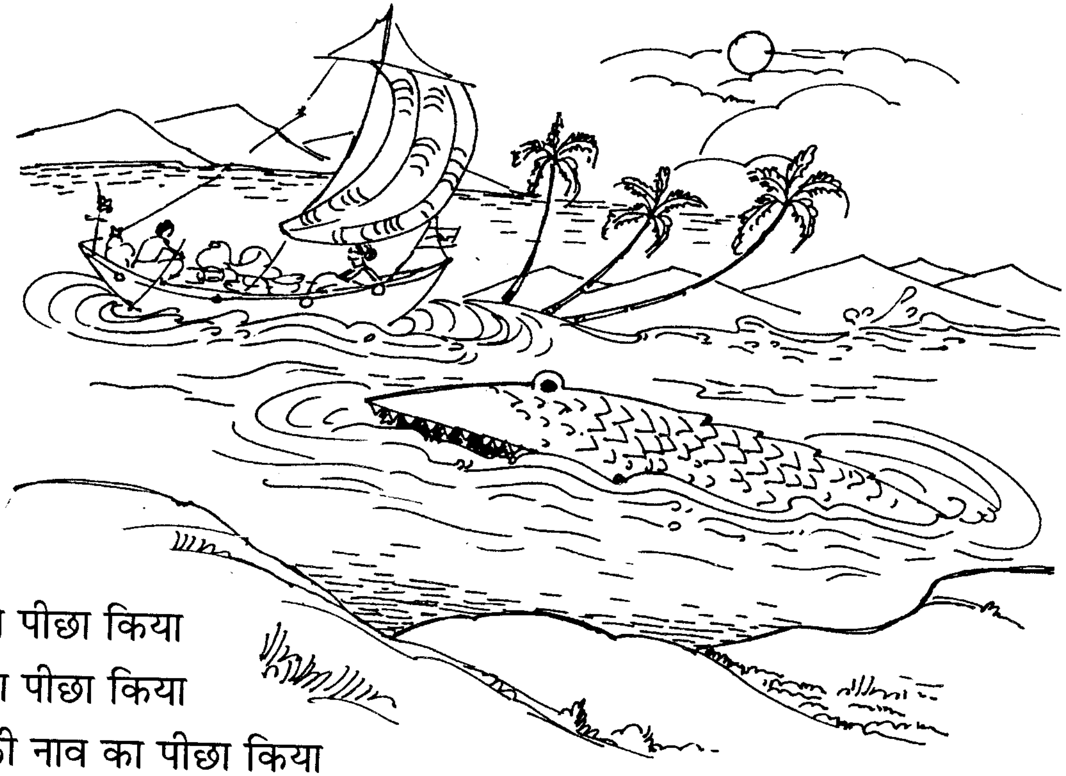

फिर एक मगर ने पीछा किया
नानी की नाव का पीछा किया
नीना की नानी की नाव का पीछा किया

फिर क्या हुआ?
चुपके से, पीछे से
ऊपर से, नीचे से
एक-एक सामान खींच लिया
एक बिल्ली का बच्चा
एक केला, एक आम
एक पक्का, एक कच्चा
एक अंडा, एक हंडा
एक बोरी, एक बोरा
एक तोता, एक आलू
एक लहसून, एक भालू
एक धीमर का जाल

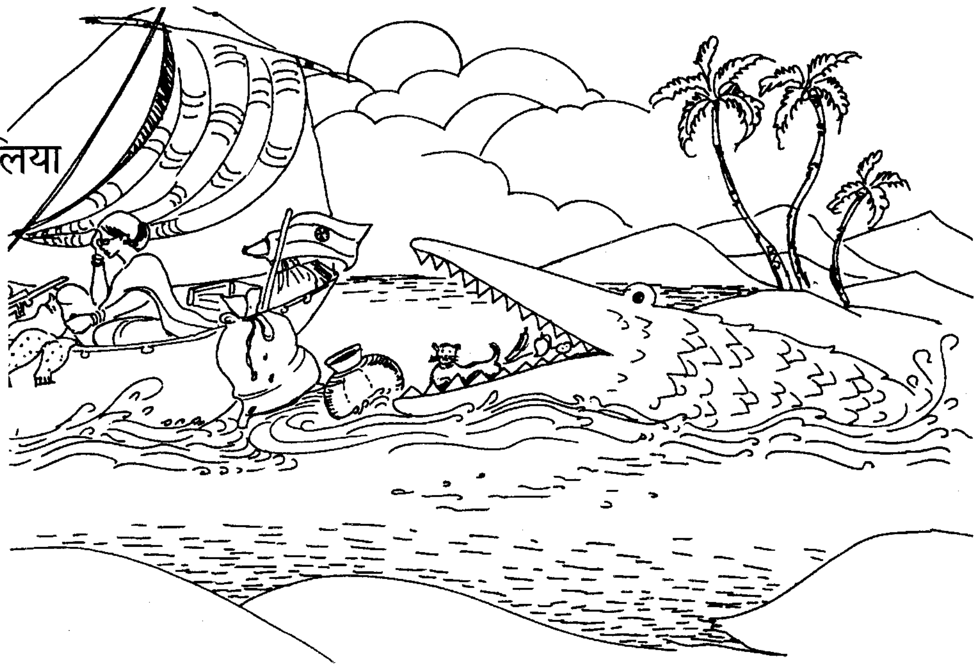

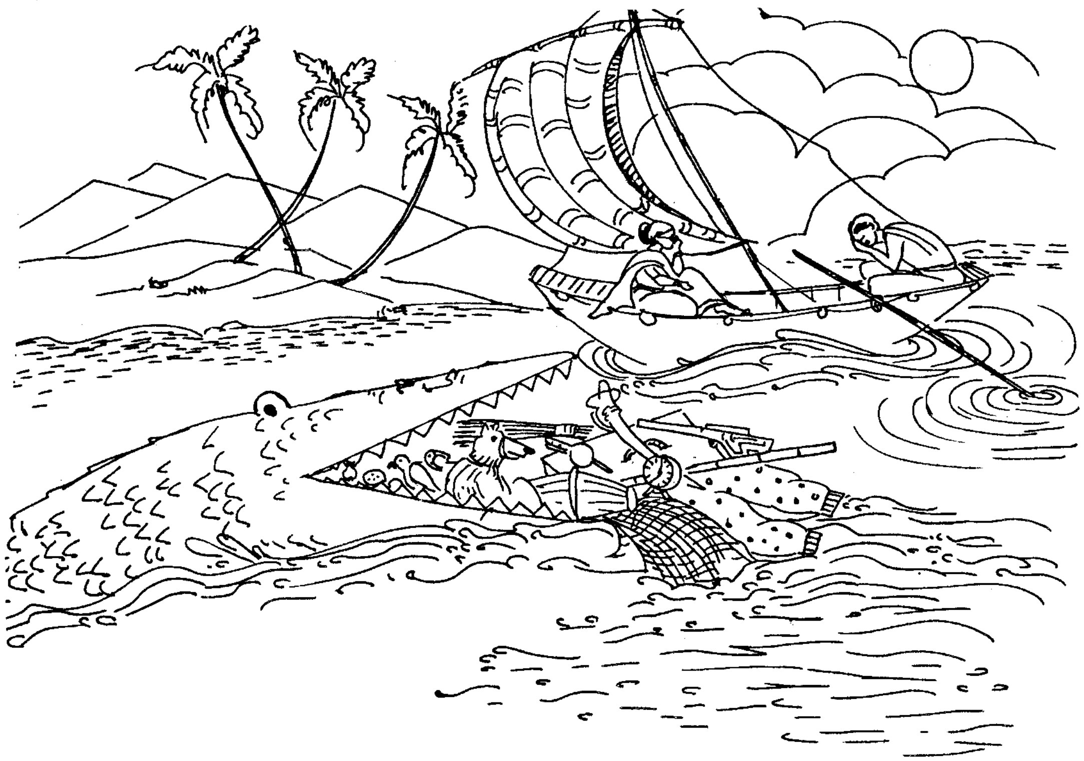

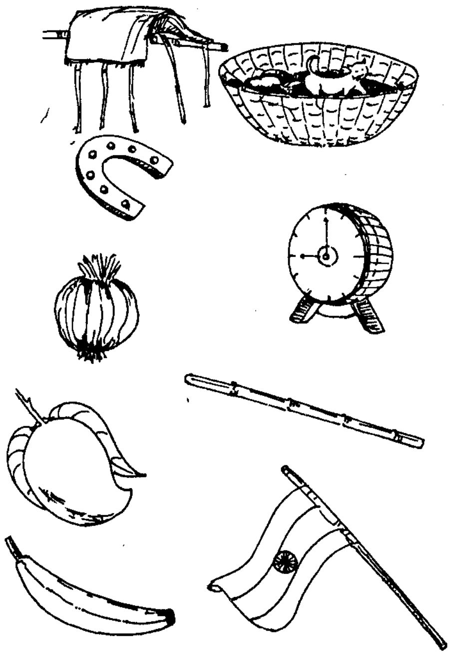

एक घोड़े की नाल
एक ढोलक, एक बीन
एक घोड़े की जीन
एक तलवार, एक सलवार
एक बंदूक, एक संदूक
एक लाड़ू, एक झाड़ू
एक घड़ी, एक छड़ी

मगर नानी क्या कर रही थी?
नानी थी बेचारी बुड्ढी बहरी
नीना की नानी थी बुड्ढी बहरी
नानी की नींद थी इतनी गहरी

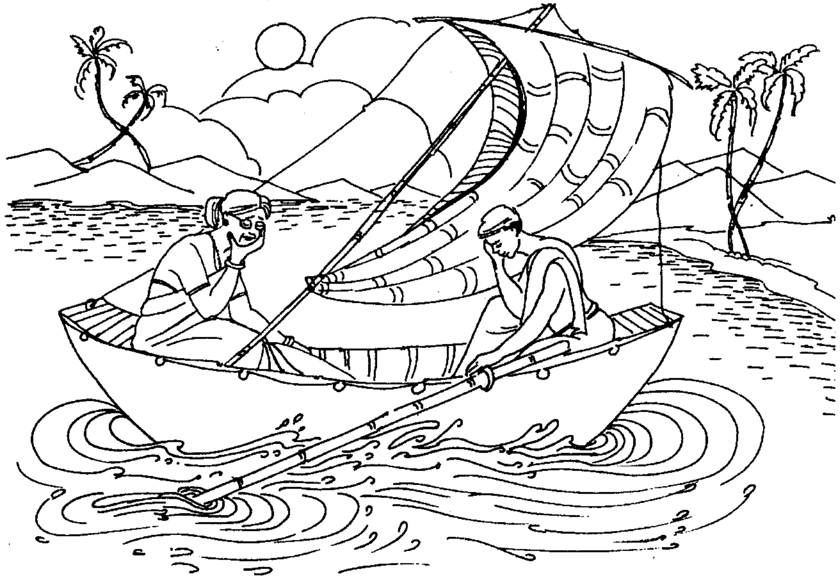

कितनी गहरी?
नदिया से गहरी
दिन दुपहरी
रात की रानी
ठंडा पानी
गरम मसाला
पेट में ताला
साढ़े सोला

पंद्रह के पंद्रह
दूनी तीस
तियां पैंतालिस
चौके साठ
पंजे पिछत्तर
छक्के नब्बे।

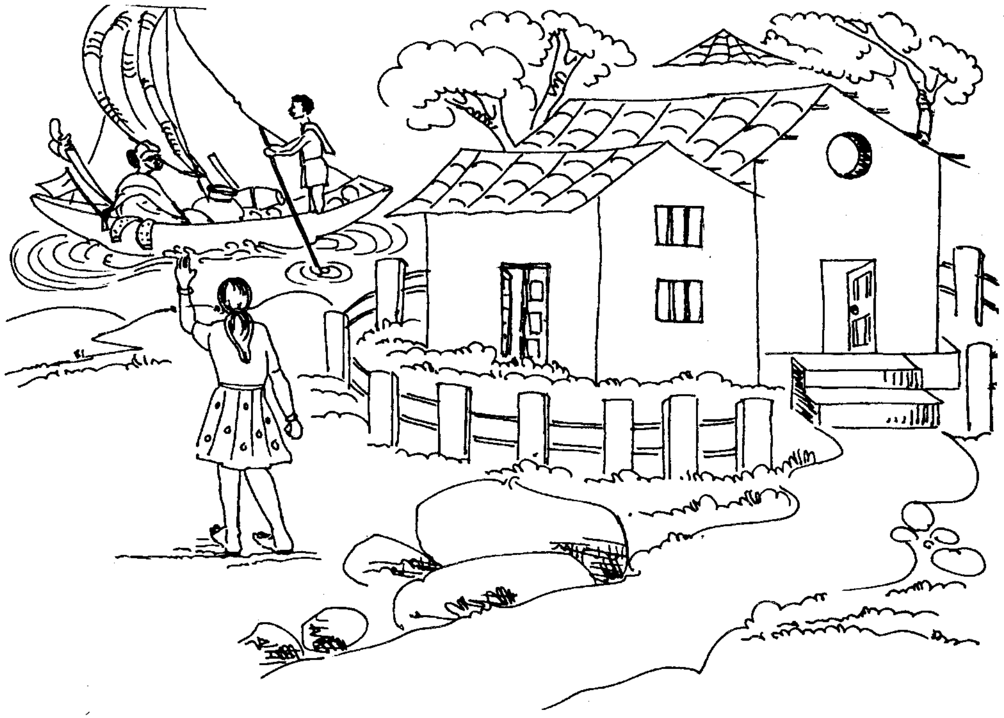

The Train

In the sunshine, through the rain,
With a bossing giant's style,
Crossing mile on mile on mile
Over hill and over plain,
Over and over,
Over and over,
Over and over and over again!
Steaming, screaming,
Screaming, steaming,
Fretting, fuming,
Fire-consuming,
Rattling goes the Railway Train!

Jook, jook, jook, jook!...
Jook, jook, jook, jook!...

Little wayside stations cry:
Look! The train is passing by!

Look, look, look, look,
Look, look, look, look!...

Wheel upon wheel!
Rattle and reel!
Rattle and reel!
Rattle and reel!
Giant of smoke and stubborn steel!
Reel and rattle!
Reel and rattle!
Tell us, is it
Off to a battle?
Reel and rattle,
Reel and rattle!
Tearing the air and frightening cattle!
How does it feel
To rattle and reel?
From there to here
From here to there
Frightening cattle and tearing the air.
From there to here
From here to there
To everywhere! To everywhere!

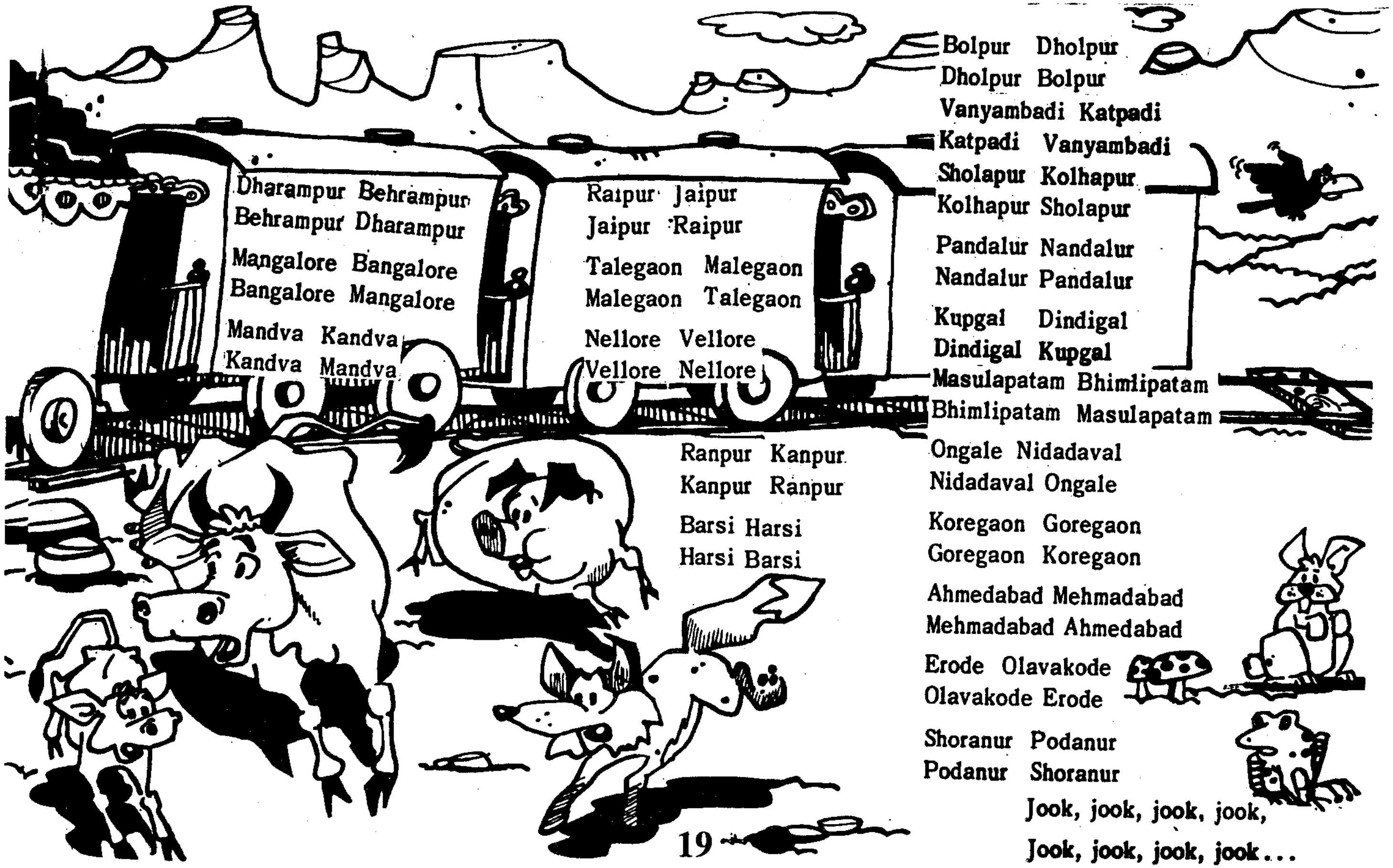
Dharampur Behrampur
Behrampur Dharampur
Mangalore Bangalore
Bangalore Mangalore
Mandva Kandva
Kandva Mandva
Raipur Jaipur
Jaipur Raipur
Talegaon Malegaon
Malegaon Talegaon
Nellore Vellore
Vellore Nellore
Ranpur Kanpur
Kanpur Ranpur
Barsi Harsi
Harsi Barsi
Bolpur Dholpur
Dholpur Bolpur
Vanyambadi Katpadi
Katpadi Vanyambadi
Sholapur Kolhapur
Kolhapur Sholapur
Pandalur Nandalur
Nandalur Pandalur
Kupgal Dindigal
Dindigal Kupgal
Masulapatam Bhimlipatam
Bhimlipatam Masulapatam
Ongale Nidadaval
Nidadaval Ongale
Koregaon Goregaon
Goregaon Koregaon
Ahmedabad Mehmadabad
Mehmadabad Ahmedabad
Erode Olavakode
Olavakode Erode
Shoranur Podanur
Podanur Shoranur
Jook, jook, jook, jook,
Jook, jook, jook, jook...

Swelling its chest
Without any rest,
Under the sky
It rattles by
It rushes through:
Koo–oo–ooo!
Ants and hills,
Water-mills;
Village schools,
Village pools;
Village yards,
Village bards.
Woman feeding
Little birds
Chirping loud.
Old man reading
Holy words
To a halting
Village-crowd.
Village marts,
Village carts;
Village ponies,
Village cronies;
Village stalls,
Broken walls;
Village fairs,
Mules and mares;

Village wells,
Temple bells;
Village tramps,
Village camps;
Village van,
Monkey-man;
Fortune-teller,
Balloon-seller;
Sheep and ox,
Wrinkled rocks;
Coal and slag,
National flag;
Ponds and ditches,
Sniffing hogs;
Barking bitches,
Sleeping dogs;

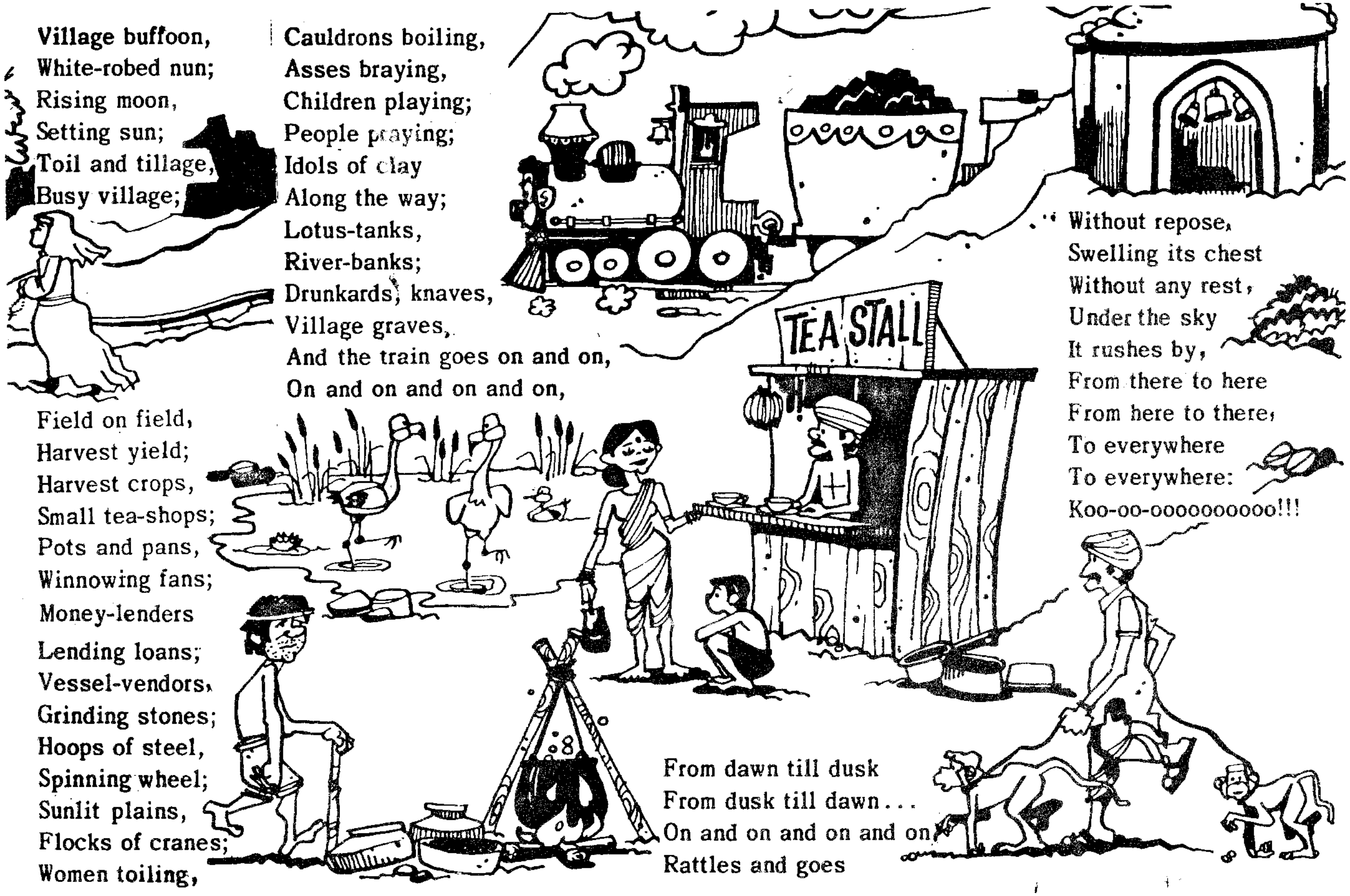

Village buffoon,
White-robed nun;
Rising moon,
Setting sun;
Toil and tillage,
Busy village;

Cauldrons boiling,
Asses braying,
Children playing;
People praying;
Idols of clay
Along the way;
Lotus-tanks,
River-banks;
Drunkards, knaves,
Village graves,
And the train goes on and on,
On and on and on and on,

Field on field,
Harvest yield;
Harvest crops,
Small tea-shops;
Pots and pans,
Winnowing fans;
Money-lenders
Lending loans;
Vessel-vendors,
Grinding stones;
Hoops of steel,
Spinning wheel;
Sunlit plains,
Flocks of cranes;
Women toiling,

From dawn till dusk
From dusk till dawn...
On and on and on and on,
Rattles and goes
Without repose,
Swelling its chest
Without any rest,
Under the sky
It rushes by,
From there to here
From here to there,
To everywhere
To everywhere:
Koo-oo-oooooooooo!!!

जन वाचन आंदोलन

बाल पुस्तकमाला

किसने नहीं सुने फिल्म *आर्शीवाद* में अशोक कुमार द्वारा गाए ये अमर बालगीत - रेलगाड़ी, छुक-छुक, छुक-छुक, छुक-छुक, छुक, बीच वाले स्टेशन बोले रुक-रुक, रुक-रुक, रुक-रुक, रुक और नानी की नाव चली, नीना की नानी की नाव चली, लंबे सफर पर। आज 30 साल बाद भी, बच्चे जब इन गीतों को सुनते हैं, तो मस्ती में झूम जाते हैं।

भारत ज्ञान विज्ञान समिति

मूल्य: 10 रुपये

-सफ़दर हाश्मी